पुस्तक समीक्षा के बहाने

रमेश थानवी

(नया शिक्षक, जुलाई-सितंबर 1992)

लर्निंग ऑल द टाइम - जॉन होल्ट, टीचर - सिल्विया ऍश्टन वॉरनर, तोत्तोचान - तेत्सुको कुरोयांगी, पुस्तक समीक्षा के इस कालम में किसी पुस्तक प्रेमी की बात करना कैसा रहेगा। ऐसे पुस्तक प्रेमी की जिसे अच्छी किताबों का दीवाना कहा जा सकता है। किताबें भी शिक्षा की, बाल साहित्य की सही किस्म के विज्ञान की, पर्यावरण की और खेल-खिलौनों की। क्या आपने इन विषयों की किताबें पढ़ने वाले किसी पुस्तक प्रेमी के बारे में भी सुना है? यदि नहीं तो सुनिए।

एक हैं अरविन्द भाई। दिल्ली में रहते हैं। अपनी पत्नी और बिटिया दुलारी के साथ। मूलत: बरेली के रहने वाले हैं। पूरा नाम है अरविन्द गुप्ता। शिक्षा-दीक्षा से वैज्ञानिक हैं। बरसों पहले कभी आई आई टी से इंजिनियरिंग की थी। सुनहरे रंगों से, मगर किसी कंपनी या सरकार की नौकरी के लिए नहीं, अपने सुख-चैन के लिए नहीं बल्कि लोगों की सेवा के लिए, सत्य के अन्वेषण के लिए और ज्ञान-विज्ञान के प्रसार के लिए। अरविन्द भाई क्या करते रहे अब तक, यह एक अलग कहानी हो सकती है। अत: फिलहाल उनके पुस्तक प्रेम के बारे में कुछ तथ्य।

शिक्षा और बाल साहित्य की पुस्तकों के दीवाने हैं अरविन्द भाई। वे शिक्षा की सभी 'नायाब' किताबों को हासिल करते रहे, पढ़ते रहे, और उनकी फोटोकॉपी 'रिडयूस्ड' फार्म में करवाकर सैकड़ों मित्रों को केवल फोटो प्रति व डॉक खर्च की कीमत पर भिजवाते रहे। किताबों के साथ कई लेखों की भी। इॅकानामिक एंड पोलिटिकल वीकली में विज्ञापन तक देते रहे कि सुधी पाठक अमुक नायाब पुस्तक की फोटोप्रति लागत मूल्य पर प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी सेवा वे लगभग दस वर्ष तक करते रहे। फिर उनको लगा कि पाठकों के हित के लिए कुछ बेशकीमती व युगांतरकारी पुस्तकों के इकॉनामी एडीशन सीमित वितरण के लिए छाप देने चाहिए तो उन्होंने ऐसा भी किया।

अरविन्द भाई ने ही भारत सैकड़ों शिक्षा प्रेमियों को डेंजर स्कूल उपलब्ध कराई। नया शिक्षक के सुधी पाठक डेंजर स्कूल के बारे में जानते हैं। यदि भूल गए हैं तो एक पृष्ठ की प्रस्तुति याद दिलाने के लिए। डेंजर स्कूल वर्तमान शिक्षा - शैली के खतरों के प्रति सचेत करने वाली पुरानी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक है। नई शिक्षा शैली के अतियों और हिंसक प्रवृत्तियों को रेखांकित करने व उन पर सटीक टिप्पणी करने वाली यह पहली पुस्तक थी। यह पुस्तक मूलत: शिक्षकों में सही शिक्षा-दृष्टि के विकास के लिए लिखी गई थी।

दूसरी एक और पुस्तक अरविन्द भाई ने सीमित वितरण के लिए उपलब्ध कराई। यह भी एक जापानी पुस्तक तोत्तोचान - खिड़की में खड़ी लड़की। यह पुस्तक विश्व में सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तकों में से एक है। जापान में इस पुस्तक की साठ लाख से भी ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं। इस पुस्तक के बारे में भी नया शिक्षक और शिविरा के पाठक पहले से जानते हैं। मगर यह सूचना नहीं होगी किसी के पास कि अपने मूल रूप में केवल लागत मूल्य पर यह पुस्तक भारतीय पाठकों के लिए अरविन्द भाई के पास उपलब्ध है।

तोत्तोचान एक लड़की की कहानी है। लेखिका तेत्सुको कुरोयांगी के खुद के बचपन की कहानी। उसके स्कूल जाने, पढ़ने और उसके अध्यापक कोबायाशी की कहानी। तेत्सुको कैसे शिक्षित हुई, स्कूल ने कितना कुछ दिया, मास्टरजी कोबायाशी कैसे थे आदि सारी बातों की एक खुली कहानी। एक रोचक उपन्यास की तरह - लगने वाली यह पुस्तक दरअसल शिक्षा-प्रक्रिया पर एक पुस्तक है। प्रामाणिक पुस्तक। इसका अंग्रेजी संस्करण कोडांगसा प्रकाशक, अमेरिका से छपा। हिंदी में यह पुस्तक प्रौढ़ शिक्षा की पत्रिका अनौपचारिका में कुछ बरस पहले छपी थी। इस पुस्तक के वियतनामी, थाई, चीनी आदि कई भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और सर्वत्र इस पुस्तक का ऐसा ही स्वागत हुआ है। भारत में ऐसा शिक्षा दर्शन अगर कोई खोजे तो गिजुभाई के दिवास्वप्न में ही मिल सकता है - अन्यत्र कहीं नहीं। सचमुच एक अमूल्य पुस्तक है तोत्तोचान और धन्य हैं अरविन्द भाई जो इस पुस्तक को सभी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करवा देने में जुटे हैं।

तीसरी अमूल्य पुस्तक जो अरविन्द भाई उपलब्ध करा सकें हैं वह है सिल्विया ऍश्टन वॉरनर की 'टीचर'। यह पुस्तक सिल्विया द्वारा न्यूजीलैंड के मावरी शिशुओं के शिक्षण के एक प्रयोग की कथा है। यह कथा शिक्षा प्रक्रिया की ही कथा नहीं है अपितु यह एक विशिष्ट-दृष्टि, शिक्षा पिपास और शिक्षा प्रेम की कथा भी है जो सिल्विया की अपनी सच्चाई थी। सिल्विया का मूल सरोकार शांति का शिक्षण था। उसका सरोकार था ऐसी शिक्षा जो बालकों को शांतिप्रिय बनाए, शांति रक्षक बनाए और उससे भी पहले बालकों को शांति-सुख का पहला स्वाद चखाए। कौन करते हैं ऐसा? किसने भला कभी चखा है शांति-सुख का स्वाद? चखा हो कभी, तो भला क्यों फैलाएगा अशांति। सिल्विया का विश्वास था कि सृजनात्मक शिक्षण शांतिदायी हो सकता है। उसी दिशा में एक प्रयोग था उसका शिशुओं के साथ। उसी प्रयोग व उसी शिक्षा-दर्शन की कहानी है यह। अद्‌भुत कहानी हर अध्यापक के लिए पठनीय कहानी। इस पुस्तक का प्रीफेस लिखा है हर्बट रीड ने। बरसों तक अनउपलब्ध रही यह पुस्तक भी भारतीय पाठकों के लिए लागत मूल्य पर अरविन्द भाई उपलब्ध कराते हैं। आप उन्हें पत्र लिख कर पैसा भेज कर मंगा सकते हैं।

अभी हाल ही में एक और पुस्तक, दुर्लभ पुस्तक उन्होंने उपलब्ध कराई है। जॉन होल्ट की पुस्तक लर्निंग ऑल द टॉइम। जॉन होल्ट के नाम से शिक्षा जगत के लोग परिचित हैं। उनकी दो पुस्तकें हाऊ चिल्ड्रन फेल व हाऊ चिल्ड्रन लर्न बहुचर्चित व चहेती पुस्तकें रही हैं पूरे विश्व में। लर्निंग ऑल द टॉइम भी बालकों की स्वयं सीखने की क्षमताओं की अलग-अलग झलक देती है। जॉन होल्ट की विवेचना, विश्लेक्षण और शिक्षा-दृष्टि भी साथ-साथ हमें परसती मांझती चलती है। पुस्तक हर शिक्षक के लिए पठनीय है।

ऐसी तमाम किताबों को पुनः उपलब्ध कराना और ऐसी एक निश्छल और निरंतर चाहत रखना कि शिक्षा जगत के लोग इनको पढ़ें, अरविन्द भाई का स्वभाव है। वे अपने आप में एक समर्पित संस्थान हैं।

अरविन्द भाई स्वयं जिन पुस्तकों के लेखक हैं उनमें से कुछ हैं - खेल-खेल में, कबाड़ से जुगाड़ और खिलौनों का बस्ता। उनकी कई पुस्तकें विज्ञान व तकनीक विभाग ने भी प्रकाशित की है। अरविन्द भाई मिरांबिका विद्यालय में हर सप्ताह एक या दो दिन पढ़ाने भी जाते हैं - शायद बालकों से सीखने जाते हैं। उनकी वैज्ञानिक दृष्टि को शब्द देने की कोशिश करते हैं। उनके साथ खेलते हुए खेल-खेल में। समीक्षा के बहाने इतना ही। शेष फिर कभी।

समाप्त